Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

युवा पीढ़ी और हिंदी साहित्य: तकनिक का प्रभाव

सहा. प्रा. राहुल नारायण पाटील*
इंदिरा गांधी वरिष्ठ महाविद्यालय, सिडको नविन नांदेड

शोध सार

प्रारंभ से ही हिंदी साहित्य यह भारतीय संस्कृतिक का और सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण अंग रहा है। हिंदी साहित्य यह सदियों से समाज के विचारों, अनुभवो और मूल्यों को प्रतिबिंबित करता आया है। साहित्य यह केवल मनोरंजन का माध्यम नहि बल्कि विचारों, परंपराओं तथा सांसकृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति रहा है। इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य अनेक विधाओं से गुजर रहा है। आधुनिक वर्तमान युवा पीढ़ी साहित्य को अपने-अपने प्रासंगिकता के आधार पर टटोलने का एवं नये विचार एवं सांस्कृतिक मूल्य प्रस्थापित करणे का कार्य कर रही है। आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण तथा कृतिम मेधा (ए.आय.) के कारण हिंदी साहित्य को विभिन्न दिशाओं में विकसित होना पड रहा है। इस शोध पत्र में वर्तमान समय में हिंदी साहित्य में तकनीकी प्रभाव के कारण साहित्य का बदलता स्वरूप तकनीक का सकारात्मक प्रभाव तथा तकनीक का नकारात्मक प्रभाव इसका विश्लेषण किया गया है। जिसमें वर्तमान समय में तकनीक का उपयोग करते हुए हिंदी साहित्य में उभरती नई समस्याएँ, घटते पाठक एवं उसका समाधान शामिल है। शोध से यह स्पष्ट हो पाता है कि इक्कीसवीं सदी में भी हिंदी साहित्य के अर्तगत तकनीक का उपयोग करते हुए युवापीढ़ी को हिंदी में सृजन की अपार संभावनाए प्राप्त है। इंटरनेट, शोशल मिडिया, ई-बुक्स और पॉडकास्ट जैसे नए माध्यमों में युवा पीढ़ी को साहित्य सृजन के अनेक रास्ते खोल दिये है। वर्तमान समय में युवा लेखकों की साहित्य के क्षेत्र में बढ़ती भागिदारी एवं लेखन की प्रवृत्ती हिंदी साहित्य का उज्वल भविष्य सुनिश्चित करती है।

बीज शब्द: *युवा पीढ़ी, तकनीक, हिंदी साहित्य, आधुनिककरण, साहित्य सृजन।*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
सहा. प्रा. राहुल नारायण पाटील
Email: patil.rahul302@gmail.com

प्रस्तावना:

साहित्य यह समाज का दर्पन होता है। हिंदी साहित्य का इतिहास प्राचीन एवं गौरवशाली रहा है। हिंदी साहित्य यह भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक चेतना को प्रतिबिंबित करती है। आदिकाल से होते हुए आधुनिक काल तक हिंदी साहित्य ने अपनी नींव रखी है। भारतीय हिंदी साहित्य यह हमेशा से ही भारतीय संस्कृति परंपरा एवं मूल्यों वाहक रही है। सिध्द साहित्य, नाथ-साहित्य, रासो-साहित्य से लेकर आधुनिक काल के महान साहित्यकारों तक सभी ने हिंदी साहित्य के दर्पन का कार्य किया है। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, महाविर द्विवेदी, समित्रा नंदन पंत, महादेवी वर्मा, हरिवंशराय बच्चन, सुर्यकांत त्रिपाठी निराला, अज्ञेय जैसे महान साहित्यकारों ने न सिर्फ हिंदी भाषा को समृध्द किया बल्कि हिंदी साहित्यिक क्षेत्र को हिंदी की विधाओं को तथा सामाजिक विचारों की नई दिशा दी है।

वर्तमान में साहित्य को विस्तृतता एवं प्रगल्भता प्रदान करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी युवा पीढ़ी के कधों पर है। वर्तमान समय में साहित्य का सृजन करना एवं साहित्य को योग्य दिशा प्रदान करना एक चनौतिपूर्ण कार्य है। आज का युवा पठन-पाठन से परावर्तीत होकर डिजिटलता की ओर मुड रहा है। जहा इंटरनेट, सोशल मिड़िया, ब्लॉग लेखक यह उनके जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। वर्तमान में तकनीक के प्रभाव के कारण युवाओं में पढ़ने की आदतों में बदलाव हुआ है। पहले जहां लंबे साहित्यिक ग्रंथों का गहनता से अध्ययन किया जाता था वही आज तकनीकी सहायतासे संक्षिप्त रूप में सोशल मिड़िया पर उपलब्ध कराई जा रही है। इसी कारण यह युवा पीढ़ी को आकर्षन की कर रही हे। परंपरागत रूप से साहित्यिक पुस्तके, पत्र-पत्रिकाएं साहित्यिक संभाओं तक सीमित थी। किंतु तकनीक के आगमन के साथ साहित्य का स्वरूप परिचर्तीत हुआ है। आज ई-पुस्तके, ऑफलाईन पत्रिकाएं, ब्लॉग, पॉडकास्ट तथा विभिन्न सोशल मिड़िया प्लेटफॉर्म ने साहित्य को एक नया आयाम प्रदान किया है।

आज की युवा पीढ़ी यह स्वतंत्र एवं मुक्त है। वह साहित्य प्राप्ती के लिए किसी दुकान या चारदिवारी पर आश्रीत नहीं है। क्योंकि इंटरनेट के माध्यम से 24 घंटे देश के किसी भी कोने में उन्हके मोबाइल सक्रीन पर मनचाही किताब या साहित्य आज उपलब्ध है। इस उपलब्धता ने हिंदी साहित्य की पहुच को वैश्वीक व्यापकता प्रदान की है।

इस शोध का उद्देश केवल वर्तमान में युवा पीढ़ी द्वारा हिंदी साहित्य में तकनीक का बढ़ता प्रभाव ही नही बल्कि बढ़ते तकनीकी प्रभाव के कारण उपस्थित समस्याओं का समाधान सुनिश्चित कर साहित्य को उर्जा प्रदान करना भी है। परिवर्तनशील समय होने के कारण यवा पीढ़ी को साहित्य के साथ तकनीक के द्वारा योग्य ताल मेल बिठाना भी जरूरी है। तकनीकी क्षेत्र में बढ़ते संशोधन, इंटरनेट, डिजिटल प्लॅटफॉर्म, कृतिम मेधा तथा शिक्षा का परिवर्तीत रूप यह सभी हिंदी साहित्य के लिए अनेक नये अवसर लेकर आये है।

हिंदी साहित्य और तकनीक ऐतिहासिक संदर्भ :

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो हिंदी साहित्य और तकनीक का संबंध नया नही है। प्राचीन काल का ऐतिहासिक दस्तावेद इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जैसे की प्राचीन कालिन शिला लेख, ताम्रपट लिखा गया साहित्य। लेकिन तब मुद्रन कला का विकास हआ तब जाकर यह सारा साहित्य जन-मानस तक पहुंचा।

बीसवीं सदी में रेडियों और दुरदर्शन के अविष्कार से साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की जिसके माध्यम से साहित्य को श्रव्य और दृश्यता मिली। टेलिविजन एवं रेडिओं के माध्यम से नाटक, कवि संमेलन एवं साहित्यिक चर्चाएं आम जनता तक प्राप्त हुई। किंत इक्कीसवी सदी में आई विभिन्न तकनीकने इस प्रक्रिया को अभूतपूर्व गती प्रदान की। इटंरनेट, सोशल मिड़िया, कृतीम मेधा जैसे प्लॅटफार्म ने साहित्य को सभी बंधनो से मुक्त कर दिया। वर्तमान समय में साहित्य किसी देश, भाषा या विशेष वर्ग तक सीमित नहीं रहा।

युवा पीढ़ी की मानसिकता और तकनींक प्रभाव :

साहित्य में तकनीक प्रभाव के कारण वर्तमान युवा पीढ़ी में की उनकी मानसिकता एवं जीवन शैली में गहनतासे परिवर्तन हो रहा है। आज ऑनलाईन प्लेटफॉर्म, सोशल मिड़िया, मोबाईल, इंटरनेट यवा पीढ़ी के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके है। सचनाओं की तीव्र उपलब्धता के कारण यवाओं में अधिक जागरूकता एवं जिज्ञास वृधी हो रही है। जिज्ञासा के कारण वह सचनाओं को जल्द से जल्द प्राप्त करने की ओर में शामील हो गया है। इसी कारण उसकी ध्यान-अवधी एवं गहनता तथा एकाग्रता भी प्रभावित हो रही है।

इस कारण हिंदी साहित्य को अनेक समस्याओं से गुजरना पड रहा है। युवा पाठक आज लंबी एवं जटील रचनाओं की अपेक्षा संक्षिप्त, सरल एवं लघु रचनाओं को पसंद करने लगे है। वर्तमान समय में इंटरनेट और मोबाईल पर ऐसे अनेक ॲप उपलब्ध है जैसे कुकु एफ एम, रेडिओ डायरी जिसके माध्यमों से आसानी से कही पर भी किसी भी समय साहित्य का आस्वाद ग्रहण किया जा सकता है। किंतु यह बदलाव साहित्य की शैली को प्रभावित कर रहा है।

तकनीक का हिंदी साहित्य पर सकारात्मक प्रभाव :

1. साहित्य की पहुंच और प्रसार :

हिंदी साहित्य में तकनीक का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव यह हे कि अब हिंदी केवल सीमित न रहकर आज वह वैश्वीक स्तर पर उपलब्ध है। विभिन्न प्लेटफार्म के माध्यम से विश्व के अहिंदी लोग भी आज हिंदी साहित्य से जुड रह है। अंतराष्ट्रीय स्तर पर साहित्य के क्षेत्र में विचारों का आदान-प्रदान हो रहा है। हिंदी साहित्य को व्यापकता प्राप्त हो रही है। जिससे हिंदी भाषा और साहित्य को अंतरराष्ट्रीय पहचान प्राप्त हो रही है।

2. नए रचनाकारों का उदय :

विभिन्न माध्यामें ने नए और युवा लेखकों को एक नया मंच प्रदान किया है। पारंपरिक रूप से जिस तरह साहित्यकारों एवं लेखकों को प्रकाशक के उपर निर्भर रहना पडता था उस निर्भरता को समाप्त कर उन्हे एक मुक्त मंच प्रदान किया है। आज असंख्य लेखक ब्लॉग, सोशल मीड़िया, ऑनलाईन पत्र-पत्रिकाए इन माध्यमों से नए रचनाकारेां को खद की नही पहचान प्राप्त हो रही है।

3. डीजिटल साहित्य :

सामान्यः जो साहित्य आज ऑफलाईन या बड़े-बडे दुकानो पर उपलब्ध होता है वही साहित्य आॅनलाईन सोशल मीडिया, ब्लॉग, ई-बुक आदि के रूप में आसानी से उपलब्ध है। उपलब्ध साहित्य यह डिजिटल स्वरूप में उपलब्ध होने की वजह से उसके रख-रखाव की भी कोई समस्या नहीं।

4. भाषा का मिशन :

आधुनिक हिंदी साहित्यकारों के हिंदी भाषा में भाषाओं का मिषण दिखाई दे रहा है। साहित्यकारों द्वारा परिवर्तीत भाषा का उपयोग जैसे की

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

हिग्लीश (हिंदी-इंग्लिश) जैसे नए भाषाई प्रयोग युवाओं में लोकप्रिय एवं प्रचलित हो रहे है।

5. साहित्य के नए रूप और प्रयोग :

वर्तमान में तकनीक प्रभाव के कारण साहित्य के नए रूप सामने आए है। युवा पीढ़ी की बदलती मानसिकता, समय की कमी, समय की व्यस्तता के कारण माईको कविता, विभिन्न लघु कथा, वीडिओं कविता और पॉडकास्ट साहित्य। यह साहित्य शैली के नए रूप युवा पीढ़ी की सशक्त अभिव्यक्ति को एक नई दिशा देते है।

तकनीक का नकारात्मक प्रभाव :

वर्तमान में जिस तरह हिंदी साहित्य के क्षेत्र में तकनीक तथा कृत्रीम मेधा के प्रभाव के कारण महत्वपूर्ण सकारात्मक बदलाव एवं परिवर्तन हुए है उसी तरह तकनीकी प्रभाव के नकारात्मकता को नाकारा नही जा सकता। नकारात्मक प्रभाव के कुछ पहलू निम्न रूप से देखे जा सकते है।

1. साहित्यिक गहराई में कमी :

युवा पीढ़ी आज सोशल मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से जुडा है। ऑनलाईन प्लेटफॉर्म पर वाईरल होने की त्वरित प्रवृतिने साहित्य की गहराई को प्रभावित किया है। इंटरनेट के युज में लोकप्रिय होने की होड़ ने गंभिर एवं वैचारिक साहित्य को किनारा कर दिया है। जलद गती के युग में लंबे-लंबे वैचारिक एवं सांस्कृतिक साहित्य को अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाया।

2. भाषा की शुध्दाता पर प्रभाव :

तकनीक प्रभाव के कारण सोशल मीडिया पर प्रयक्त भाषा यह पारंपारिक साहित्यिक भाषा से परिवर्तीत होती है। इंटरनेट और सोशल मीडिया पर आज भाषा का अल्पाकरानिक, संक्षिप्त तथा भाषा का लघु रूप प्रायोगिक हो रहा है। सोशल मीडिया पर प्रमुख भाषा में अग्रेंजी शब्दों और हिंग्लिश का बढ़ता प्रयोग हिंदी की शुध्दता तथा व्याकरण के लिए चुनौति बन रहा है। इससे भाषा की शैलिगत शुध्दता तथा मौलिकता पर प्रभाव पड रहा है।

3. पढ़ने की बदलती आदते :

प्रत्येक हाथ में मोबाईल एवं हर मोबाईल में इंटरनेट की वजह से युवा पीढ़ी की पाठन क्षमता प्रभावित हुई है। आज पाठन-पठन की बजाय युवा संक्षिप्तता तथा लघु सामग्री में व्यस्त है। आज वह लंबे-लंबे लेख, ग्रंथ सामग्री पढ़ने के बजाय उसे संक्षिप्त रूप में सनना पसंत कर रहा है। जिसमें विचारशील सहभागिता कम हो रही है।

4. प्रासंगिकता का संकट :

तकनीक प्रभाव के कारण सोशल मीडिया के माध्यम से पश्चिमी संस्कृति और अंग्रेजी भाषा के बढ़ते अतिक्रमन के कारण हिंदी साहित्य की पुस्तको में बिक्री में गिरावट तथा युवा पीढ़ी का साहित्य से दूर जाना यह भी एक समस्या है।

निष्कर्ष :

वर्तमान समय में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में तकनीक प्रभाव के कारण साहित्य में सकारात्मक बदलाव, साहित्य की वैश्विक पहुंच तथा नये साहित्यिक रचनाकार, लेखकों का बदलता प्रभाव सभी ने साहित्य का नया रूप और नई दिशा दी है। यह परिवर्तन अनिवार्य और स्वाभाविक है। तथा साहित्य में तकनीकी प्रभाव के कारण युवाओं में साहित्य के प्रति बढ़ती जिज्ञासा, यह हिंदी साहित्य के भविष्य को निर्धारित करेगा। तकनीक यह न तो किसी साहित्य का कायम शत्रु होता है ना ही समस्याओं का संपूर्ण समाधान तकनीक यह केवल एक माध्यम है जिसके द्वारा साध्य तक पहुँचा जा सके।

युवा पीढ़ी तकनीक के साथ-साथ साहित्यिक संवेदना भाषा की गलतियां एवं साहित्य के वैचारिक गहराईकों बनाट रखे तो हिंदी साहित्य न केवल समृध्द होना बल्कि वह अधिक प्रभावशाली रूप से गतिमान बनेंगा।

संदर्भ सूची :

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेंद्र, पृ.सं. 62

2. हिंदी भाषा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, नमिता मिश्रा

3. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक अध्ययन, डॉ. सनिल कुमार शर्मा, पृ.सं.110